वीर का धर्म ये कहता, हृदय में शांति तुम धरना।
क्षमा धारण 'विशद' दिल में कि अर्पण प्राण तुम करना॥
क्षमा करना क्षमा करना, क्षमा को धर्म गाता है।
क्षमा के भाव से प्राणी, 'विशद' मुक्ति को पाता है॥

सोलह कारण भावना

दोहा- सोलह कारण भावना, विशद भाव से भाय।
तीर्थंकर पदवी लहे, मोक्ष महाफल पाय॥

दर्शन विशुद्धि भावना

मोह तिमिर से आच्छादित है, तीन लोक सारा।
काल अनादी से भटके हैं, मिथ्या भ्रम द्वारा॥
कभी नरक नर सुर गति पायी, पशुगति में भटके।
राग-द्वेष मद मोह प्राप्त कर, विषयों में अटके॥
सप्त तत्त्व छह द्रव्य गुणों में, श्रद्धा उर धरना।
मिथ्या भाव छोड़कर सम्यक्, रुची प्राप्त करना॥
शंकादि दोषों को तजकर, भेद ज्ञान पाना।
दरश विशुद्धी गुणीजनों ने, या को ही माना॥1॥

D:\meenakshi\vishad sagar ji\narnol ma

विनय सम्पन्न भावना

अहंकार दुर्गति का कारण, सद्गति का नाशी।
निज के गुण को हरने वाला, दुर्गुण की राशि।।
मद की दम को दमन करें जो, बनकर श्रद्धानी।
नम्र भाव धारण करते हैं, जग में सद्ज्ञानी।।
उच्च गोत्र का कारण बन्धू, मृदुल भाव गाया।
पुण्य पुरुष होता है जिसने, विनय भाव पाया।।
'विशद' विनय सम्पन्न भावना, भाव सहित गाये।
तीर्थंकर सा पद पाकर के, सिद्ध शिला जाये।।2।।

अनतिचार शीलव्रत भावना

नर भाव पाया रत्न अमौलिक, विषयों में खोता।
भोगों में अनुराग लगा जो, अतीचार होता।।
अतीचार से रहित व्रतों, को पाले जो कोई।
प्रकट होय आतम निधि उसकी, सदियों से खोई।।
कृत-कारित अरु अनुमोदन से, मन-वच-तन द्वारा।
नव कोटि से शील व्रतों का, पालन हो प्यारा।।

rnol mahila mandal\narnol final\1st\ 1-6-18

सोलहकारण शुभम् भावना, भाव सहित भावे।
अनतिचार व्रत शील से अपना, जीवन महकावे।।3।।

अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोग भावना

ज्ञानावरणी कर्म ने भाई, जग में भरमाया।
सम्यक् ज्ञान हृदय में मेरे जाग नहीं पाया।।
सम्यक् श्रद्धा के द्वारा अब, विशद ज्ञान पाना।
ज्ञाता बनकर ज्ञान के द्वारा, चित् स्वरूप ध्याना।।
अजर अमर पद पाने हेतू, ज्ञानामृत पाना।
ॐकार मय जिनवाणी के, छन्दों को गाना।।
ज्ञान योग होता अभीक्ष्ण ये भावों से ध्याना।
'विशद' ज्ञान के द्वारा भाई, शिवपुर को जाना।।4।।

संवेग भावना

है संसार अपार असीमित, पार नहीं पाया।
काल अनादी से प्राणी यह, जग में भरमाया।।
भय से हो भयभीत जानकर, इस जग की माया।
मंगलमय संवेग भाव बस, ये ही कहलाया।।

D:\meenakshi\vishad sagar ji\narnol ma

सम्यक् दर्शन ज्ञान चरण को, सम्यक् धर्म कहा।
मोक्ष महल का सम्यक् साधन, अनुपम यही रहा।।
धर्म और उसके फल में जो, हर्ष भाव आवे।
सु संवेग भाव शास्त्रों में, ये ही कहलावे।।5।।

शक्तितस्त्याग भावना

काल अनादी से यह प्राणी, तन का दास रहा।
साथ निभायेगा यह मेरा, ये विश्वास रहा।।
प्यास बढ़ाता है पीने से, जैसे जल खारा।
मृगतृष्णा बढ़ती रहती है, मिले न जल धारा।।
पल-पल करके नर जीवन का, समय निकल जाता।
इन्द्रिय रोध किये बिन भाई, हो ना सुख साता।।
इच्छाओं का दमन करे फिर, महामंत्र जपना।
यथा शक्ति तप करना भाई, शक्तिसः तपना।।6।।

शक्तितस्तप भावना

राग आग में जलकर अब तक, यूँ ही काल गया।
परिणत हुए भोग विषयों को, माना नया-नया।।

rnol mahila mandal\narnol final\1st\ 1-6-18

निज निधि को खोकर के अब तक, पर पदार्थ पाये,
प्रकट दिखाई देते हैं पर, हमने अपनाये॥
पर परिणत से बचकर हमको, निज निधि को पाना।
छोड़ विकल्पों को अब सारे, निज को ही ध्याना॥
यथाशक्ति जो त्याग करे वह, मोक्ष मार्ग जानो।
जैनागम में त्याग शक्तिसः, इसी तरह मानो॥7॥

साधु समाधि भावना

काल अनादी से मिथ्यावश, जन्म मरण पाया।
निज शक्ती को भूल जगत् में, प्राणी भरमाया॥
आधि व्याधि अरु पद उपाधि में, नर जीवन खोया।
मोह की मदिरा पीकर भारी, कर्म बीज बोया॥
जन्म मरण होता है तन का, चेतन है ज्ञाता।
कर्म करेगा जैसा प्राणी, वैसा फल पाता॥
चेतन का ना अंत है कोई, ना ही आदी है।
श्रेष्ठ मरण औ सत् अनुभूती, साधु समाधि है॥8॥

D:\meenakshi\vishad sagar ji\narnol ma

वैय्यावृत्ती भावना

स्वारथ का संसार है भाई, सारा का सारा।
लालच की बहती है जग में, बड़ी तीव्र धारा।।
पर उपकार को भूल रहे हैं, इस जग के प्राणी।
पर में निज उपकार छुपा है, कहती जिनवाणी।।
साधक करे साधना अपनी, संयम के द्वारा।
रत्नत्रय अपने जीवन से, जिनको है प्यारा।।
विघ्न साधना में कोई भी, उनकी आ जावे।
वैय्यावृत्ती विघ्न दूर करना ही कहलावे।।9।।

अर्हद् भक्ति भावना

चार घातिया कर्मनाशकर, 'विशद' ज्ञान पाये।
समोशरण की सभा में बैठे, अर्हत् कहलाये।।
दिव्य देशना जिनकी पावन, जग में उपकारी।
सुहित हेतु पाते इस जग के, सारे नर-नारी।।
अर्हत् होते हैं इस जग में, सद्गुण के दाता।
अतः सार्व कहलाए भगवन्, भविजन के त्राता।।

rnol mahila mandal\narnol final\1st\ 1-6-18

हो अनुराग गुणों में उनके, भाव सहित भाई।
अर्हत् भक्ती गुणीजनों ने, इसी तरह गाई॥10॥

आचार्य भक्ति भावना

दर्शन ज्ञान चरित तप साधक, वीर्यचरण धारी।
रत्नत्रय का पालन करते, गुरु पंचाचारी॥
भक्तों के हैं भाग्य विधाता, मुक्ती पद दाता।
शिक्षा-दीक्षा देने वाले, जन-जन के त्राता॥
सत् संयम की इच्छा करके, गुरु के गुण गाते।
भाव सहित वंदन करने को, चरणों में जाते॥
गुरु चरणों की भक्ती जग में, होती सुख दानी।
गुणियों ने आचार्य भक्ति शुभ, इसी तरह मानी॥11॥

बहुश्रुत (उपाध्याय) भक्ति भावना

ग्यारह अंग पूर्व चौदह के, होते जो ज्ञाता।
सम्यक् दर्शन ज्ञान के गुरुवर, होते हैं दाता॥
संतों में जो श्रेष्ठ कहे हैं, समता के धारी।
ज्ञान ध्यान तप में रत रहते, ऋषिवर अनगारी॥

D:\meenakshi\vishad sagar ji\narnol ma

करते हैं उपदेश धर्म का, जो मंगलकारी।
संत दिगम्बर और निरम्बर, नीरस आहारी॥
उपाध्याय को जग भोगों से, पूर्ण विरक्ती है।
भाव सहित गुण गाना उनके, बहुश्रुत भक्ती है॥12॥

प्रवचन भक्ति भावना

द्रव्य भाव श्रुत के भावों में, तत्पर जो रहते।
घोर तपस्या करने वाले, परिषह भी सहते॥
चेतन का अनुभव जो करते, निर्मल चित्धारी।
चित् को निर्मल करने वाली, वाणी मनहारी॥
सप्त तत्त्व झंकृत होते हैं, जिनवाणी द्वारा।
दिव्य देशना निःसृत होती, जैसे जलधारा॥
जिस वाणी से जागृत होवे, चेतन शक्ती है।
'विशद' ज्ञान में वर्णित पावन, प्रवचन भक्ती है॥13॥

आवश्यकापरिहाणी भावना

नहीं कभी सत् कर्म किया है, जीवन व्यर्थ गया।
भूले हैं कर्त्तव्य स्वयं के, आती बड़ी दया॥

rnol mahila mandal\narnol final\1st\ 1-6-18

श्रावक के गुण क्या होते हैं, जाने नहीं कभी।
पाप व्यसन जो होते जग में, करते रहे सभी।।
होते क्या कर्त्तव्य हमारे, उनको पाना है।
व्रत संयम से जीवन अपना, हमें सजाना है।।
कर्त्तव्यों के पालन हेतू, भावों से भरना।
आवश्यका ऽपरिहार भावना, सम्पूरण करना।।14।।

मार्ग प्रभावना भावना

सम्यक् दर्शन ज्ञान चरण यह, सम्यक् धर्म कहा।
काल अनादी से यह बन्धू, मोक्ष का मार्ग रहा।।
मोक्ष मार्ग पर आगे चलकर, और चलाना है।
मंजिल को जब तक न पाया, बढ़ते जाना है।।
महिमा अगम है जिन शासन की, कैसे उसे कहें।
संयम तप श्रद्धा भक्ती में, हरपल मगन रहें।।
मोक्ष मार्ग औ जैन धर्म की, महिमा जो गाई।
पथ प्रभावना सत् संतों ने, जग में फैलाई।।15।।

प्रवचन वत्सलत्व भावना

गाय का ज्यों बछड़े के प्रति, स्नेह अटल होता।
काय वचन अरु मन से शुभ, अनुराग विमल होता।।

D:\meenakshi\vishad sagar ji\narnol ma

स्वार्थ रहित साधर्मी जन से, जो अनुराग रहा।
श्री जिनेन्द्र ने जैनागम में, ये वात्सल्य कहा।।
द्वेष भाव के द्वारा हमने, कितने कष्ट सहे।
मद माया की लपटों में हम, जलते सदा रहे।।
सदियाँ गुजर गयीं हैं लेकिन, धर्म नहीं पाया।
चेतन की यह भूल रही अरु रही मोह माया।।16।।

दोहा- शब्द अर्थ की भूल को, पढ़ना सुधी सुधार।
पंच परम गुरु के चरण वंदन बारम्बार।।

चौंसठ ऋद्धि भावना

दोहा- तपकर चौंसठ ऋद्धियाँ, पाते हैं ऋषिराज।
करके जिनकी वन्दना, होय सफल सब काज।।

चौपाई

बुद्धि ऋद्धि के भेद बताए, अष्टादश संख्या में गाए।।1।।
केवलज्ञान ऋद्धि के धारी, अनन्त चतुष्टय धर शिवकारी।।2।।
ऋद्धि मनः पर्यय जो पाते, पर के मन की बात बताते।।3।।
अवधिज्ञान ऋद्धी धरज्ञानी, होते जग-जन के कल्याणी।।4।।

rnol mahila mandal\narnol final\1st\ 1-6-18

रत्न कोष्ठ में भिन्न दिखावें, कोष्ठ बुद्धि मुनिवर त्यों पावें॥5॥
एक शब्द को मुनिवर पावें, सर्व ग्रन्थ का सार बतावें॥6॥
संभिन्न संश्रोत ऋद्धी धारी, होते सब ध्वनि के उच्चारी॥7॥
पदानुसारिणी ऋद्धी पावें, पद सुन ग्रन्थ का सार बतावें॥8॥
दूर स्पर्श ऋद्धि मुनि पाएँ, दूर स्पर्श की शक्ति जगाएँ॥9॥
दूर श्रवण ऋद्धी धर जानो, दूर वस्तु के श्रोता मानो॥10॥
दूरास्वाद ऋद्धि प्रगटावें, स्वाद दूर वस्तू का पावें॥11॥
दूर घ्राण ऋद्धी जो पावें, दूर घ्राण शक्ति जगावें॥12॥
दूरावलोकन ऋद्धि जगावें, दूर वस्तु अवलोकन पावें ॥13॥
प्रज्ञा श्रमण ऋद्धि के धारी, सूक्ष्मत्व के रहे प्रचारी॥14॥
ऋषि प्रत्येक बुद्धि के धारी, संयम ज्ञान निरूपणकारी ॥15॥
दश पूर्वित्व ऋद्धि धर ज्ञानी, साधू कहे अटल श्रद्धानी॥16॥
ऋषी चतुर्दश पूर्वी जानो, अंग पूर्व श्रुतधारी मानो॥17॥
ऋषी प्रवादित्व ऋद्धी पाएँ, वाद कुशल की शक्ति जगाएँ॥18॥
अष्टांग महानिमित्त के ज्ञाता, अष्ट निमित्त के अर्थ प्रदाता॥19॥
जंघा चारण ऋद्धि जगावें, जांघ उठाए बिना चल जावें॥20॥
अग्नि शिखा ऋद्धी प्रगटावें, अग्नि शिखा पर चलते जावें॥21॥

D:\meenakshi\vishad sagar ji\narnol ma

श्रेणी चारण ऋद्धी पावें, श्रेणि गमन की सिद्धि जगावें॥22॥
फल चारण ऋद्धी मुनि पाएँ, फल पे गमन की शक्ती पाएँ॥23॥
जल चारण शुभ ऋद्धि जगावें, तन्तू पर मुनि चलते जावें॥24॥
पुष्प चारण ऋद्धि मुनि पाते, फूल पे हल्के हो चल जाते॥25॥
बीजांकुर धारी ऋषि ज्ञानी, उन पर चले नहीं हो हानी॥26॥
नभ चारण ऋद्धी के धारी, ऋषिवर होते गगन विहारी॥27॥
अणिमा ऋद्धी जो मुनि पावें, अणु सम अपनी देह बनावे॥28॥
महिमा ऋद्धी जो ऋषि पाते, मेरु समान उच्च हो जाते॥29॥
ऋषिवर लघिमा ऋद्धि जगावें, वायु सम हल्के हो जावें॥30॥
मुनिवर गरिमा ऋद्धी धारी, देह बनाते हैं जो भारी॥31॥
मनबल ऋद्धी धर अनगारी, द्वादशांग श्रुत चिन्तनकारी॥32॥
ऋषी वचन बल ऋद्धी पावें, सब श्रुत पाठ की शक्ति जगावें॥33॥
ऋषी काय बल पाएँ ऋद्धी, तन में होवे बल की वृद्धी॥34॥
कामरूप ऋद्धी के धारी, रूप बनावें कई प्रकारी॥35॥
ऋषिवर ऋद्धि वशित्व जगावें, प्राणी सब वश में हो जावें॥36॥
ऋषि ईशत्व ऋद्धि जो पावें, वे त्रैलोक्य अधिपति हो जावें॥37॥
ऋषि प्राकम्य ऋद्धि प्रगटावें, जल पे गमन की शक्ति जगावें॥38॥

rnol mahila mandal\narnol final\1st\ 1-6-18

अन्तर्धान ऋद्धि ऋषि पाते, क्षण में ही अदृश हो जाते॥39॥
आप्ति ऋद्धि धर भूपर होवे, सूर्य चंद को भी जो छूवें॥40॥
अप्रतिघात ऋद्धि जो पावें, घुसकर गिरि के बाहर जावें॥41॥
दीप्त ऋद्धि जो मुनिवर पावें, देह कांति ऋषिवर विकशावें॥42॥
तप्त ऋद्धि ऋषिवर प्रगटाते, उनके धातू मल छय जाते॥43॥
महा उग्र तप ऋद्धी पावें, घोर सुतप की शक्ति जगावें॥44॥
ऋद्धि घोर तप पाने वाले, करें घोर तप ऋषी निराले॥45॥
घोर पराक्रम ऋद्धि जगावें, भू को ऊपर ऋषी उठावें॥46॥
महोपवास की शक्ति प्रदायी, परम घोर तप ऋद्धि बताई॥47॥
घोर ब्रह्मचर्य तप धर होवें, स्वप्न में भी ब्रह्मचर्य ना खोवें॥48॥
आमर्षोषधि ऋद्धी धारी, जन-जन के हों रोग निवारी॥49॥
सर्वौषधि ऋद्धी मुनि पावें, वायु स्पर्श से रोग बिलावें॥50॥
आशीर्विष ऋद्धी प्रगटावें, वचन बोलते जहर चढ़ावें॥51॥
आशीर्विष औषधि के धारी, जिनके वचन हैं रोग निवारी॥52॥
दृष्टी विष ऋद्धी जो पाते, दृष्टि डालते जहर चढ़ाते॥53॥
दृष्टी निर्विष ऋद्धी पावें, दृष्टि डालते रोग नशावें॥54॥
क्ष्वेलौषधि धर का कफ आदी, का स्पर्श नशाए व्याधी॥55॥

D:\meenakshi\vishad sagar ji\narnol ma

विडौषधि ऋषि का मल जानो, रोग नशाए ऐसा मानो॥56॥
जल्लौषधि ऋद्धी के धारी, का जल्ल गाया रोग निवारी॥57॥
मल्लौषधि ऋद्धी ऋषि पावें, उनका मल सब रोग नशावे॥58॥
क्षीर स्त्रावि ऋद्धी प्रगटावें, नीरस भोजन क्षीर सा पावें॥59॥
घृत स्त्रावी रस ऋद्धी भाई, व्रत सम भोजन हो सुखदायी॥60॥
कर में मधु स्त्रावी के जानो, भोजन मधु सम होवे मानो॥61॥
अमृत स्त्रावि ऋद्धी जगावें, अमृत सा भोजन ऋषि पावें॥62॥
अक्षीण संवास ऋद्धी पावें, चक्रवर्ति की सेन्य समावें॥63॥
अक्षीण महानस ऋद्धि उपावें, सेना चक्री की जिम जावे॥64॥

चौंसठ ऋद्धि का फल

उत्तम संयम तप जो पावें, श्रेष्ठ ऋद्धियाँ ऋषी जगावें।
चौंसठ श्रेष्ठ ऋद्धियाँ ध्याएँ, मन में अतिशय शांती पाएँ॥
कही ऋद्धियाँ महिमा शाली, भक्ति भक्त की जाय ना खाली।
राक्षस भूत प्रेत भी आवे, बाधा उसकी भी नश जावे॥
अंधा यदि ऋद्धी को ध्यावे, उसको भी दिखने लग जावे।
बहरे हो सुनने लग जाए, पागल का पागलपन जाए॥

rnol mahila mandal\narnol final\1st\ 1-6-18

दुखिया अपना दु:ख मिटाए, रोग ना रोगी का रह पाए।
निर्धन जीवन में धन पाएं, अज्ञानी सद्ज्ञान जगाएं।।
'विशद' ऋद्धियाँ हम भी ध्याएँ, सुख शांती सौभाग्य जगाएँ।
मनोकामना पूरी होवे, मन की सब का कालुषता खोवे।।
दोहा- ऋद्धीधर ऋषिराज को, ध्याते हैं जो लोग।
ऋद्धि सिद्धि समृद्धि पा, पाते शिव सुखभोग।।

जाप्य:- *ॐ ह्रीं चतु:षष्ठि ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो नम:।*

D:\meenakshi\vishad sagar ji\narnol ma